क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइलः 9415217277/81
ई-मेलःyogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

प्रकाशनार्थ

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनॉक : 10/2/2013

10 फरवरी 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

क्रियायोग ध्यान की अनिवार्य आवश्यकता पर प्रकाश

10 फरवरी 2013 इलाहाबाद । ''कोयले का कालिमा में स्वर्णिम लालिमा और पावन पवित्र करने वाली अग्नि छिपी रहती है । जैसे ही अग्नि की चिन्गारी से काले कोयले का स्पर्श होता है वैसे ही कोयला अपने स्वरूप में प्रकट हो जाता है और वह असीम सौन्दर्य युक्त लाल रंग का अग्नि समत्व का गुण प्रदर्शित करने लगता है । उसी प्रकार अज्ञानमय आवरण से ढका हुआ मानव स्वरूप के अंदर आध्यात्मिक स्वर्णिम समत्व शक्ति युक्त लालिमा छिपी हुई है। जैसे ही क्रियायोग ध्यान की चिन्गारी का सम्पर्क मानव से होता है वैसे ही मानव का वास्तविक स्वरूप प्रकट होने लगता है । मानव का वास्तविक स्वरूप सर्वज्ञ तत्व, सर्वशक्तिमान तत्व, जीवन, अनन्त शांति और परमानन्द है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में कल्पवासियों व देश विदेश से आये साधकों को व्यक्त किया ।

क्रियायोग ध्यान की आवश्यकता और अनिवार्यता पर प्रकाश डालते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि वे सभी राष्ट्र जो अज्ञानान्धकार से अविकसित, अव्यवस्थित और दुःखित हैं उन्हें क्रियायोग की बड़ी आवश्यकता है । आज आवश्यकता है कि भारत देश के अज्ञानान्धकार परिवेश को हटाकर भारत के उज्जवल स्वरूप को प्रकट करके विश्व का मार्ग दर्शन करना । इसी लक्ष्य को पाने के लिए श्री परमहंस योगानन्द जी ने 7 मार्च सन् 1952 को रात्रि 9:30 बजे लॉस ऐन्जिलिस में स्थित बिल्टमोर होटल के 50 राष्ट्रों के दूतावास के महान

आत्माओं के सम्मुख भविष्य को स्पष्ट करते हुए विश्व के प्रत्येक राष्ट्रों में क्रियायोग के सबल प्रसार के लिए हे भारत ! मैं पुनः वहीं आ रहा हूँ ..... की भविष्यवाणी के पश्चात् महासमाधि में प्रवेश किया । श्री परमहंस योगानन्द जी ने स्पष्ट किया था कि मेरे महासमाधि के 30 वर्ष के बाद क्रियायोग का बहुमुखी प्रसार भारत में पुनः शुरू होगा जिससे विश्व के सभी राष्ट्र आपस में सच्चे मित्र बन सकेंगे । श्री परमहंस योगानन्द की वाणी में अमोघ शक्ति का असर सन् 1983 में प्रकट हुआ । सन् 1983 में क्रियायोग आश्रम की स्थापना विश्व के सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक स्थल प्रयाग राज में श्री महावतार बाबा वटवृक्ष की छाया में हुई । श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में संस्थापित क्रियायोग आश्रम से क्रियायोग की दिव्य किरणें भारत वर्ष के कोने-कोने में पहुँचना प्रारम्भ हो गयीं । ये किरणें जैसे-जैसे भारतवासियों को स्पर्श करेंगी वैसे-वैसे उन लोगों के अंदर सुषुप्त ज्ञान, शान्ति, शक्ति व दिव्य प्रेम प्रकट होने लगेगा । इसके फलस्वरूप भारत के संविधान का नवीनीकरण होगा । शिक्षा के विविध आयाम व न्यायपालिका और राजनीतिक परिवेश सब बदल जाएगा । भारतवर्ष आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि युक्त सुखी और सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में पुनः प्रकाशित होगा ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैन्ड, साउथ अफ्रीका, जर्मनी, इटली, लंडन आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6 बजे तक और मोरी रोड पर महर्षि पतंजलि धाम परिसर में रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता